बुन्गला देखी थारी अजब बहार, ज्या में निराकार दीदार |
काया बुन्गला में पातर नाचे, देख रह्यो संसार |
किताक पगड़ी ले चल्या रे, कई गया जमारो हार || १ ||

काया बंगले में बिणजी बिणजे, बिणजे जिनसे अपार |
हरिजन हो सो हीरा बिणजे, पात्थर या संसार || २ ||

काया बंगले में दौड़ा दौड़े, दौड़ रह्या दिनरात |
पांच पच्चीस मिल्या पाखरिया, लूट लियो बाज़ार || ३ ||

काय बंगले में तपसी तापे, अधर सिंहासन ढाल |
हाड मांस से न्यारो खेले, खेले खेल अपार || ४ ||

काया बुन्गले में चोपड़ मांडी, खेले खेलण हार |
अबके बाजी मंडी चोवठे, जीत चलो चाहे हार || ५ ||

नाथ गुलाब मिल्या गुरु पूरा, जड़ पाया दीदार |
भानिनाथ शरण सतगुरु की, हर भज उतारो पार || ६ ||

जय श्री नाथजी की .....